अफगानिस्तान से संबंधित द्वितीय क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग सम्मेलन में प्रधानमंत्री का भाषण

दिनांक 18 नवम्बर, 2006
नई दिल्ली

भारत और अफगानिस्तान द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किए जा रहे अफगानिस्तान से संबंधित द्वितीय क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग सम्मेलन के अवसर पर आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

मैं महामहिम राष्ट्रपति श्री हामिद करजई तथा अफगान शिष्टमण्डल के सदस्यों का विशेष रूप से स्वागत करता हूं। महामहिम राष्ट्रपति का भारत आगमन हमारे लिए हमेशा ही खुशी का मौका होता है। मैं और मेरे सहयोगी इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए आपके और आपके दल के साथ मिलकर काम करने को उत्सुक हैं।

वर्षों से युद्ध और आपसी लड़ाई-झगड़ों से त्रस्त रहने के बाद अफगानिस्तान ने सक्रिय लोकतंत्र की राह पर चलते हुए जो प्रगति की है वह वाकई चौंकाने वाली है। राष्ट्रपति जी यह आपके कुशल और प्रबुद्ध नेतृत्व की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग सम्मेलन इस दृष्टिकोण पर आधारित है कि हमारे क्षेत्र के देश अफगानिस्तान में सहायता कार्यक्रमों के लिए अपना सहयोग दें।

काबुल सम्मेलन में क्षेत्रीय देश काबुल घोषणा-पत्र को अपनाने के लिए एक मंच पर एकत्र हुए थे। इस मंच ने यह महसूस किया कि क्षेत्रीय देशों के साथ सहयोग पर आधारित अफगानिस्तान के विकास हेतु कार्य-नीति से गरीबी कम करने तथा लंदन कॉम्पेक्ट मानदण्डों और सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों को हासिल करने की संभावनाएं बढ़ी हैं।

मौजूदा सम्मेलन एक ऐसा अवसर है जब हमें इस बात का सावधानीपूर्वक और ईमानदारी से जायजा लेना तथा मूल्यांकन करना है कि अभी तक हमने क्या किया है और आगे हम क्या कर सकते हैं? मुझे उम्मीद है कि इस सम्मलेन के जो नतीज़े सामने आयेंगे उनसे अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण और विकास के प्रति अंतरराष्ट्रीय समुदाय की जिम्मेदारी और संकल्प को नया बल मिलेगा। मैं आपको यह भी आश्वासन देना चाहता हूं कि भारत इस सहयोगपूर्ण प्रयास में अग्रणी भूमिका निभाएगा।

हम मानते हैं कि अफगानिस्तान में शांति और खुशहाली न केवल अफगानिस्तान के लोगों के ही हित में है, बल्कि पूरे क्षेत्र तथा समूचे विश्व के हित में भी है।

भारत आपके सपनों के अफगानिस्तान का समर्थन करता है। यह एक ऐसा देश है जिससे होकर मध्य एशिया, पश्चिम एशिया, चीन तथा भारतीय उप-महाद्वीप तक पंहुचा जा सकता है। इसलिए, सार्क में अफगानिस्तान का शामिल होना एक स्वाभाविक घटना है। हम अफगानिस्तान को न केवल दक्षिण एशियाई मित्र देशों के एक महत्वपूर्ण देश के रूप में देखते हैं, बल्कि यह हमारे लिए पश्चिम जाने का प्रवेश-द्वार है। यह अफगानिस्तान के लिए एक और संपर्क मार्ग है जिसके जरिए वह प्राचीन समय से अपने सबसे बड़े बाजार अर्थात भारत से जुड़ा रहा है। जैसे-जैसे सार्क का मुक्त व्यापार क्षेत्र विकसित होगा और अन्य साझी गतिविधियां बढ़ेंगी, अफगानिस्तान को काफी फायदा पहुंचेगा।

पिछले पांच सालों में अफगानिस्तान में हुए उल्लेखनीय बदलाव के बावजूद, उसे अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हम दक्षिणी और दक्षिण-पूर्व अफगानिस्तान के कतिपय हिस्सों में बढ़ती आतंकवादी हिंसा से चिंतित हैं। इससे न केवल अफगानिस्तान की सुरक्षा को खतरा पहुंचा है, बल्कि वहां विकास के चल रहे प्रयासों में बाधा पहुंची है। एक सामूहिक जिम्मेदारी के साथ ही इस चुनौती से निपटा जा सकता है।

इस सम्मेलन के विचारार्थ विषयों में ऊर्जा, परिवहन, व्यापार और कृषि जैसे कई विषयों को शामिल किया गया है। सम्मेलन में समग्र क्षेत्र के साथ लाभकारी संबंध विकसित करते समय इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में राष्ट्रीय क्षमताओं के आधार पर पुनर्निर्माण का एक समेकित खाका तैयार करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

कठिन भू-भाग वाले इस देश के समक्ष वैसे ही अपनी चुनौतियां हैं। इसलिए, अफगानिस्तान की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए परिवहन क्षेत्र और इसका क्षेत्रीय देशों के साथ संपर्क का होना जरूरी है। इसके साथ ही साथ, माल और सेवाओं के व्यापार और सीमा के आर-पार आवाजाही को आसान बनाने के लिए उपाय किए जाने होंगे ताकि परिवहन लागत को कम किया जा सके और विनियमों तथा कार्य-व्यवस्थाओं में सामजस्य लाया जा सके। इन उपायों से जहां एक ओर वैध व्यापार जो आज सीमा पार से हो रही तस्करी से नहीं पनप रहा है, को बढ़ावा मिलेगा वहीं दूसरी ओर, सुरक्षा की भावना भी बढ़ेगी।

कृषि, अफगानिस्तान के 80% से अधिक लोगों की आजीविका का मुख्य आधार है। इसलिए, पुनर्निर्माण के किसी भी प्रयास में इस पर प्रमुख रूप से जोर दिया जाना चाहिए। विस्तार कार्यकलापों, प्रौद्योगिकीय सुविधाओं और कारगर जल प्रबंध-व्यवस्था के जरिए कृषि क्षेत्र में तेजी से विकास से निस्संदेह अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित किया जा सकेगा। इससे आजीविका के भी अवसर पैदा होंगे। भारत इस क्षेत्र में तकनीकी और अन्य सहायता देने में सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। इसके अलावा, स्थानीय समुदायों को छोटी विकास परियोजनाओं के लिए भी वह मदद देता रहा है।

मुझे पूरी उम्मीद है कि क्षेत्रीय व्यापार सम्मेलन में यहां भाग लेने आए व्यवसायी इस बात को मानेंगे कि अफगानिस्तान में व्यापार का माहौल बहुत बदल चुका है। मुझे यकीन है कि

सम्मेलन में अफगानिस्तान के मौजूदा बुनियादी ढांचे में हुए सुधार, रणनीतिक स्थिति, संसाधनों और व्यापार के बाद के माहौल को उजागर किया जाएगा। हम उनके कल होने वाले विचार-विमर्श के नतीजों और सिफारिशों की उत्सुकता से प्रतीक्षा में हैं।

जैसा राष्ट्रपति श्री करजई हमेशा ही याद दिलाते रहे हैं कि अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में मानव संसाधनों के विकास का सबसे ज्यादा महत्व है। सरकार हो अथवा विधायिका तथा न्यायपालिका जैसी अन्य लोकतांत्रिक संस्थाएं हों अथवा अर्थव्यवस्था, सभी में संस्थागत सदृढ़ीकरण, क्षमता-वर्द्धन और प्रशिक्षण हेतु कदम उठाए जाने चाहिए। भारत न केवल आई.टी.ई.सी. के परम्परागत कार्यक्रमों के जरिए, बल्कि भारतीय उद्योग परिसंघ के सहयोग से "कौशल बढ़ाने की पहल" जैसी नई सार्वजनिक और निजी भागीदारी के जरिए भी इस दिशा में अपना योगदान दे रहा है।

अफगानिस्तान सरकार द्वारा स्वयं तय की गई प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए अफगानिस्तान के साथ आज हमारी साझेदारी में एक बहु-आयामी सहयोग कार्यक्रम जुड़ गया है। हम मित्रता और सद्भावना, जो हमारे दोनों देशों के लोगों को आपस में जोड़ते हैं, के तौर पर अफगान लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए आगे आने को तैयार हैं।

आज भारत स्वयं भी बदलाव के दौर से गुजर रहा है और हमें उम्मीद है कि हम आने वाले सालों में प्रतिवर्ष 8 से 10 फीसदी उच्च विकास दर बनाए रखने में सक्षम हो सकेंगे। लेकिन खुशहाली लाने का हमारा सपना केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हम चाहते हैं कि हमारे सम्पूर्ण क्षेत्र में समृद्धि और खुशहाली आए। मुझे विश्वास है कि भारत के सतत आर्थिक विकास का हमारे पड़ौसी देशों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और इससे भारत भी लाभान्वित होगा। औपनिवेशी काल से पहले इस क्षेत्र के देशों के बीच स्वाभाविक रूप से जो आर्थिक संपर्क हुआ करते थे, वे फिर से शुरू होंगे और आर्थिक विकास से इस क्षेत्र की राजनीतिक विचारधारा में बदलाव आएगा।

हमारा सपना है कि इस क्षेत्र के सभी देशों के सहयोगपूर्ण प्रयासों से अफगानिस्तान के लोगों को आजादी का माहौल मिले और वे गरिमा, आत्म-सम्मान और खुशहाली की जिन्दगी गुजार सकें।

अंत में, मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि यद्यपि इस सम्मेलन का केन्द्र-बिन्दु अफगानिस्तान है, फिर भी सम्मेलन के नतीजों का असर क्षेत्र के हमारे सारे देशों पर पड़ेगा। चूंकि अफगानिस्तान, भारत का एक निकट और मित्र पड़ोसी देश हैं, इसलिए इस प्रक्रिया की सफलता में भारत की विशेष दिलचस्पी है। मुझे उम्मीद है कि सम्मेलन के निर्णयों से ठोस मुद्दों का समाधान खोजने में मदद मिलेगी जिससे क्षेत्रीय सहयोग का आधार तैयार होगा और हमारे क्षेत्र के सभी देशों के परस्पर लाभ के लिए अवसर ढूंढ़ने में भी सहायता मिलेगी।

हमारा साझा विगत रहा है। वैश्वीकरण के इस युग जब सीमाओं का कोई औचित्य नहीं रह गया है, ऐसे में हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम आर्थिक सहयोग के साझे भविष्य, क्षेत्र की खुशहाली तथा अफगानिस्तान के लोगों के बेहतर जीवन के लिए मिलकर काम करें।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं सम्मेलन की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

....